International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 370-371

पौराणिक साहित्य एवं पर्यावरण संरक्षण

डॉ॰ राज पाल

एसोसिएट प्रोफेसर एवं, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, सी॰आर॰ किसान महाविद्यालय, जीन्द, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

भारत की संस्कृति अत्याधिक समृद्ध एवं विशाल है। इस संस्कृति के निर्माण एवं सृदृढ़ता में पौराणिक साहित्य की बहुत अधिक भूमिका रही है। पुराणों में मानव जीवन के बहु–आयामी पक्षों का विवेचन हुआ है। समाज में रहते हुए मनुष्य का क्या धर्म है, त्याज्य एवं अत्याज्य कर्म तथा एक स्वस्थ मनुष्य किस प्रकार राष्ट्र के उत्थान में अपना योगदान दे सकता है मनुष्य की स्वस्थता तभी संभव है जब वह पर्यावरण संरक्षण के प्रति सचेत रहे। पर्यावरण संरक्षण आधुनिक समाज के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। इसका समाधान प्राचीन भारतीय पौराणिक साहित्य में उपलब्ध होता है। पुराणों में पर्यावरण संरक्षण के आधारभूत सिद्धान्तों का विवेचन प्राप्त होता है।

सामान्य शब्दों में 'पर्यावरण' शब्द का शाब्दिक अर्थ है परि अर्थात् चारों ओर से आवरण अर्थात् आवृत्त या आच्छादित करने वाला। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वे प्राकृतिक संसाधन जो हमें चारों ओर से आच्छादित करते हैं पर्यावरण के अन्तर्गत आते हैं। जैसे – भूमि, जल, वायु, वृक्ष, वनस्पति, पशु–पक्षी, नदियाँ, झरनें तालाब इत्यादि। इन सबके अतिरिक्त पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय सम्बंधों को भी पर्यावरण के अन्तर्गत लिया जा सकता है। इन सभी प्राकृतिक उपादानों के संरक्षण के विषय में पौराणिक साहित्य में विस्तार से प्रकाश डाला गया है। क्योंकि इनके संरक्षण के अभाव में जीवन सम्भव नहीं है। पुराणों के विषय में कहा गया है

"अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्"।।

अर्थात् सभी पुराणों का एक ही लक्ष्य है, परोपकार करना। पौराणिक साहित्य विकासशील रहा है, जिसका अन्तिम सम्पादन व्यास द्वारा किया गया है। पुराण नाम से ही इसकी प्राचीनता की सिद्धि होती है। सायणाचार्य ने पुराण को वैष्णववादी तथा 'पुरातन–पुरुष–वृतान्त प्रतिपादकानि पुराण' कहा है।[1] इस प्रकार पुराणों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि जगत की प्रथमावस्था से लेकर सृष्टि क्रिया तक का वर्णन पुराण कहलाता है। अथर्ववेद के अनुसार पुराणों का उद्भव ऋक्, साम, छन्द एवं यजुष् के साथ ही हुआ।[2] प्राचीन वैदिक आख्यानों का पृथक् रुप से किया गया संकलन ही पुराण है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि पुराणों में समस्त जीवनोपयोगी समस्त प्रकार का ज्ञान–विज्ञान निहित है।

पुराणों में पर्यावरण संरक्षण की धारणा मुख्य रुप से उपलब्ध होती है, जैसे – धर्म, अहिंसा, शान्ति, पशु–पक्षी सरंक्षण, वृक्ष–वनस्पति संरक्षण और यज्ञ द्वारा पर्यावरण शुद्धि की अवधारणा इत्यादि। भागवतपुराण के अनुसार जो मनुष्य काम, लोभ, भय या द्वेषवश परम्परागत धर्म को छोड़ देता है उसका कभी मंगल नहीं होता।[3] क्योंकि ये मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु हैं। इनके वश में होने पर मनुष्य प्रकृति का अनुचित दोहन करने लगता है तथा पर्यावरण प्रदूषण की भयावह समस्या पैदा हो जाती है। इसलिए मानव को कभी अपने धर्म से विस्मृत नहीं होना चाहिए। मानव को सदा अहिंसा का पालन करना चाहिए। जिस प्रकार एक छोटी–सी चोट या घाव से स्वयं को पीड़ा का अनुभव होता है, उसी प्रकार दूसरों को भी पीड़ा का अनुभव होता है। नारदपुराण में कहा गया है कि जो मनुष्य शान्तिपूर्वक, अहिंसा का पालन करते हैं, उनकी देवता भी पूजा करते हैं।[4] वायुपुराण तथा मत्स्यपुराण में वर्णन मिलता है कि जब ऐहिक तथा पारलौकिक कार्यो को करने के लिए इन्द्र ने अन्य देवताओं के साथ मिलकर यज्ञ की प्रथा प्रचलित की थी तब उस समय यजुर्वेद के अध्येता तथा वहन करने वाले ऋषिगण पशुबलि का उपक्रम कर रहे थे। उस समय वहाँ पशुओं को बंधा देखकर इन्द्र देव से यज्ञ की विधि के बारे में कहने लगे कि हिंसापूर्ण धर्म की इच्छा से यह महान् अधर्म नहीं करना चाहिए। इस यज्ञ में पशुवध की यह प्रथा नवीन लगती है। इन पशुओं की यज्ञ में हिंसा से धर्म का विनाश माना गया है। वेद विधि प्रतिपादित धर्म विधि का अनुष्ठान करना चाहिए अथवा निष्पाप तथा विधियुक्त यज्ञ करना चाहिए।[5] विष्णुपुराण के अनुसार –

यज्ञदानतपांसीह परश्र न च भूतले।
भवन्ति तस्य यस्यति परिश्राणे न मानसम्।।

विष्णु पुराण 3/12/45

अर्थात मनुष्य को मनसा वाचा कर्मणा शुद्ध होकर कर्म करने चाहिए। उपकार से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और अपकार से बढ़कर कोई पाप नहीं है।

सुख की प्राप्ति के लिए शान्ति एक परम् अद्भुत साधन है। 'पुष्प शान्तिर्विशिष्यते' अर्थात् शान्ति को पूर्णतया हृदय में रखना एक विशेष प्रकार का पुष्प है। मत्स्यपुराण में अनेक प्रकार की शक्तियों का वर्णन किया गया है। आकाश, पृथिवी, महोत्पात आ जाने पर, अतिवृष्टि एवं अनावृष्टि आदि के होने पर वैष्णवी शान्ति की धारणा उपलब्ध होती है। इसके अतिरिक्ति पर्यावरण शुद्ध रखने के लिए नित्य नियम से हवन करने की धारणा उपलब्ध होती है, जिसके करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।[6]

पशु–पक्षी संरक्षण को बनाए रखने के लिए पुराणों में नरक के विशेष कष्टों का वर्णन किया गया है जैसे जो व्यक्ति पशुओं को बुरी तरह से मारते हैं वे सभी नरक में जाते हैं और यमदूत उनको लक्ष्य बनाकर पाप से मारता है। जो पुरुष गाय का वध करते हैं वह पाँच कल्प एक नरक की घोर यातनाओं को भी झेलते हैं।[7] इस प्रकार पशुओं का संरक्षण भी पर्यावरण संरक्षण का एक प्रमुख पहलू है।

वृक्ष तथा वनस्पतियों का संरक्षण पर्यावरण संरक्षण के लिए सबसे प्रमुख है, क्योंकि वृक्ष–वनस्पतियाँ मनुष्य को स्वच्छ वायु प्रदान करती हैं तथा विषैली वायु का अवदोहन करती हैं और यह सर्वविदित है कि वायु के बिना जीवन सम्भव नहीं है। पौराणिक साहित्य में वृक्षारोपण, विभिन्न प्रकार के वृक्षों तथा गोचरभूमि की प्रतिष्ठा सम्बन्धी अनेक व्यवस्थाएं दी गई हैं। वृक्षों की महिमा का प्रतिपादन करते हुए कहा गया है कि जिसके पुत्र नहीं हैं उसके लिए वृक्ष ही पुत्र हैं।[8] धर्म और अर्थ से रहित बहुत से पुत्रों से तो

मार्ग में लगाया गया एक वृक्ष ही श्रेष्ठ है जिसकी छाया में पथिक विश्राम करते हैं जो फल मार्ग में छायादार वृक्ष लगाने से मिलता है वह न तो यज्ञ तीर्थादि से मिलता है और न पुत्र उत्पन्न करने से।[9] भविष्यपुराण के अनुसार मानव की शुभगति पुत्र बिना नहीं होती। यह तो उचित है, किन्तु यदि पुत्र कुपुत्र हो गया तो वह अपने पिता के लिए कलंकरुप नरक का कारण बन जाता है। इसलिए बुद्धिमान् मनुष्य को चाहिए कि वह विधिपूर्वक वृक्षारोपण करे। इससे न तो वह कलंक को प्राप्त होगा और न ही निन्द्य होगा अपितु उसको कीर्ति प्राप्त होगी और अन्त में शुभगति प्राप्त होती है।[11]

उपसंहार

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि पौराणिक साहित्य में सभी प्राकृतिक उपादानों के संरक्षण पर आवश्यक बल दिया गया है। सम्बन्धों में शान्ति की कामना की गई है। अहिंसा पर बल देकर यज्ञ में पशु हिंसा का विरोध किया गया है तथा वेदविधि प्रतिपादित यज्ञ सम्पादन तथा निष्पाप यज्ञ को करने पर बल दिया गया है, जिससे पर्यावरण की शुद्धि हो। अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि होने पर वैष्णवी शान्ति करनी चाहिए। पशु–पक्षी संरक्षण को बनाए रखने के लिए नरक का भय दिखाकर उनके संरक्षण की कामना की गई है। पुराणों में वृक्षों को पुत्र मानकर वृक्षारोपण पर बल दिया गया है। यह भी कहा गया है कि जो मनुष्य वृक्षारोपण करता है, वह अपने समस्त पितृवंशों का उद्धार कर देता है। इस प्रकार भारत के प्राचीन ऋषि–मुनियों व मनीषियों के द्वारा प्रतिपादित मूल्यों, सभ्यता एवं संस्कृति को समझने से भारत ही नहीं अपितु वैश्विक पर्यावरण के संरक्षण में पौराणिक साहित्य में प्रतिपादित पद्धतियाँ सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

संदर्भ सूची

1. 'ऋतस्यपथाप्रेत' – शुक्लयजुर्वेद, 745।
2. ऋचः सामानि छन्दांसि पुराणं यजुषा सह। अथर्ववेद – 11.7. 24।
3. य एवं विसृजेद् धर्म पारम्पर्या गतं नरः।
4. कामलोभाद् भयाद् द्वेषात् वैनाण्नोति शोभनम्।। श्रीमद्भागवतपुराण 10/11।
5. अहिंसादिपरः शान्तः सोऽपि बन्ध सुरोत्तमै। नारदपुराण – 1/55।
6. वायुपुराण, मत्स्यपुराण – 157, 200–209।
7. शिवपुराण – 11/38।
8. नारदपुराण – 11/38।
9. भविष्यपुराण अंक कल्याण, वर्ष 66/1, पृ0–8।
10. वही पृ0–400।
11. वही पृ0–400।
12. वही पृ0–400।